नवदुनियाँ, भोपाल
25 SEP 2016

पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती आज

सुखी रहना है तो भौतिक ही नहीं आध्यात्मिक उन्नति करनी होगी

भारतीय दर्शन में मनुष्य की चेतना की सर्वोच्च अवस्था वह है, जहां संपूर्ण सृष्टि को स्वयं के भीतर और स्वयं को संपूर्ण सृष्टि के भीतर अनुभव होता है। पढ़ने-लिखने और कहने-सुनने में यह बात बहुत आती है, लेकिन इसे जो व्यक्ति वास्तविक रूप से महसूस कर लेता है, वह देवतुल्य हो जाता है। एकात्म मानववाद दर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऐसे ही महापुरुष थे। उनके बचपन का प्रसंग है कि बाजार में सब्जी बेचने वाली वृद्धा को खोटी चवन्नी दी, लेकिन बाद में जब उन्हें इसका पता चला तो वे दौड़कर बाजार गए और खोटी चवन्नी वापस लेकर खरी चवन्नी दी। वे स्वयं कितने भी कष्ट उठा लें, लेकिन अपने कारण दूसरों को कष्ट नहीं होने देते थे। पंडितजी के पास अंत: प्रज्ञा थी। उन्होंने धर्म, अर्थशास्त्र, अध्यात्म, समाज, व्यक्ति सहित सभी विषयों पर मौलिक चिंतन कर सार्थक निष्कर्ष हमारे सामने रखे। पंडितजी कहते थे कि हम लोगों ने अंग्रेज शासन में अंग्रेजी वस्तुओं का विरोध कर हर्ष महसूस किया था, पर आश्चर्य है कि अंग्रेजों के जाने के बाद हम उन्हीं का अनुसरण कर रहे हैं। पंडितजी कहते थे कि एक ही चेतना समस्त जड़चेतन में विराजमान है। इसलिए हम सबके है, सब हमारे हैं। मनुष्य मात्र शरीर नहीं, शरीर के साथ मन भी है, बुद्धि भी, आत्मा भी। मनुष्य को पूरी तरह सुखी रखना है तो शरीर के साथ मन, बुद्धि और आत्मा के सुख का भी विचार करना होगा। केवल भौतिक प्रगति नहीं, आध्यात्मिक उन्नति का भी विचार करना होगा। मुझे संतोष है कि 11-12 वर्षों से मप्र में हम पंडितजी के दर्शन के आधार पर योजनाएं चला रहे हैं। महामानव पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्मशताब्दी वर्ष में हम कमजोर वर्गों के हित में श्रेष्ठतम काम के संकल्प को और मजबूत करें। स्वयं में दूसरों को देखें और दूसरों को स्वयं में एक ही चेतना या 'आत्म' को चराचर जगत में अनुस्यूत देखें। यही पंडितजी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शिवराज सिंह चौहान

-शिवराज सिंह चौहान
(ब्लॉगर मप्र के मुख्यमंत्री हैं)